गरुड़ के सात सवाल

(उत्तरकांड में गरुड़ – काकभुशुंडि संवाद)

सत्संदेश नवंबर 1962 में प्रकाशित

तो इस वक्त एक जगह एक और थोड़ा सा **portion** (हिस्सा) है (रामायण का), वह आपके सामने रखा जाता है जहाँ गरुड़ ने सात सवाल काकभुशुंडि से किये हैं कि आप इन सात सवालों का जवाब दो। गौर से सुनिए, बड़े ज़रूरी सवाल हैं। आम लोगों के दिलों में यही सवाल आते हैं और उन सवालों का जवाब काकभुशुंडि जी ने क्या दिया, वह गौर से सुनिये। सब महात्मा यही जवाब देते हैं मगर ताहम (तो भी) जो जो जिस ग्रंथ का भाव रखता है उसी में से कुछ चीज़ पेश कर दी जाए तो उस की पूरी तसल्ली हो जाती है। गौर से सुनें वे सात सवाल क्या हैं और उनका जवाब क्या दिया है?

(1) पुनि सप्रेम बोलेउ खगराऊ। जौं कृपाल मोहि ऊपर भाऊ।।

तो गरुड़ ने कहा कि तुम मुझ से बड़ा प्रेम करते हो, ऐ काकभुशुंडि जी! आप मुझ पर मेहरबान हो। मेरे दिल में कुछ शंकायें हैं, मैं वह आप से पूछना चाहता हूँ, आप दया करें। हमेशा याद रखो, जितना शिष्य के लिए प्यार गुरु के दिल में है, उतना शायद हज़ारों माताओं और पिताओं में नहीं होगा, समझे। माता – पिता भी यह ख्याल रखते हैं कि बड़ा हो कर हमें कमा कर देगा। अरे भाई! गुरु क्या चाहता है? कुछ भी नहीं। वह यह चाहता है कि इस की आत्मा प्रभु से जुड़ जाये, बस। यह उस का **mission** (काम) होता है। वे कहते हैं कि तुम मुझ से बड़ा प्यार करते हो, मेहरबान हो, इसलिये मैं अर्ज़ करता हूँ, आप इनका जवाब

दीजिये।

(2) नाथ मोहि निज सेवक जानी। सप्त प्रस्न मम कहहु बखानी।।

कहते हैं, मुझ को अपना सेवक जानो, मेरे दिल में सात सवाल हैं, उनका आप दया कर के जवाब दीजिये। वे कौन कौन से सवाल हैं, गौर से सुनिए।

(3) प्रथमहिं कहहु नाथ मति धीरा। सब ते दुर्लभ कवन सरीरा।।

ऐ स्वामी! तुम बड़ी अकल वाले हो, बड़े दानिशमन्द हो। तो यह आप बतायें कि शरीरों में से सबसे दुर्लभ शरीर कौन सा है? पैदाइशें तो बड़ी हैं, बड़ी योनियां हैं, तो योनियों में से कौन सी योनि का शरीर धारण करना सबसे दुर्लभ है, यह पहला सवाल है।

(4) बड़ दुख कवन कवन सुख भारी। सोउ संछेपहिं कहहु बिचारी।।

कहते हैं, सब से बड़ा दुख किस बात में है और सब से बड़ा सुख किस बात में है, यह ज़रा खोल कर, थोड़ा सा खुलासा करके मुझे समझाइये ताकि मुझे समझ आ जाये कि सब से बड़ा दुख किस बात में है और सबसे बड़ा सुख किस बात में है। दुख तो हम नहीं चाहते न, सुख चाहते हैं। तो बड़ा सुख किस बात में है? क्या इन्द्रियों के भोगों – रसों में है? हम इसमें भी सुख मानते हैं कि नहीं? इसका जवाब देंगे और सबसे बड़ा दुख किस बात में है, यह दूसरा और तीसरा सवाल है।

(5) सन्त असन्त मरम तुम्ह जानहु। तिन्ह कर सहज सुभाव बखानहु।।

कहते हैं, आप सन्त और असन्त के भेद के जानने वाले हो, आप इन को सहज स्वभाव से बताओ कि इनका स्वभाव क्या होता है? सन्त का क्या होता है और असन्त का क्या होता है? इन दोनों के स्वभाव क्या होते हैं? यह बताइये। यह चौथा सवाल हुआ।

(6) कवन पुन्य श्रुति बिदित बिसाला। कहहु कबन अघ परम कराला।।

पाँचवाँ सवाल यह है कि वेदों में कौन सा पुण्य सबसे बड़ा गिना गया है। वेद श्रुति हैं न। ये श्रुति हैं, स्मृति और हैं। श्रुति वह है जिसका ताल्लुक (सम्बन्ध) सुनने से है। और, कौन सा पाप सबसे ज़बरदस्त है? यह छठा सवाल है ।

(7) मानस रोग कहहु समुझाई। तुम सर्बग्य कृपा अधिकाई।।

कि इन्सान को कौन-कौन से रोग लग रहे हैं? आप तो सर्वज्ञ हो, सब कुछ जानने वाले हो, यह ज़रा खोल कर समझाओ कि हम लोगों को कौन-कौन से रोग लग रहे हैं? कैसे हम उनसे आज़ाद हो सकते हैं, कैसे उन रोगों से बच सकते हैं? यह सातवाँ सवाल है।

(8) तात सुनहु सादर अति प्रीती। मैं संछेप कहउं यह नीती।।

इस पर काकभुशुंडि जी बोले कि ऐ प्यारे! तुम प्रेम से सुनो बात को, मैं तुम को अब इन सवालों का जवाब दे रहा हूँ। प्रेम से सुनो, सब तरफ से ख्याल को हटा कर सुनो, मैं इख्तसार करके, थोड़ा **digest** करके, संक्षेप करके आपके सामने इस का जवाब देता हूँ।

(9) नर तन सम नहिं कवनिउ देही। जीव चराचर जाचत तेही।।

कहते हैं, इन्सान के जिस्म से ज्यादा कोई बढ़ कर नहीं है, मनुष्य जीवन सबसे ऊंचा है, **highest rung in creation** है मनुष्य जीवन।

सर्ब जून तेरी पनिहारी।। सर्ब में तेरी सिकदारी।।

सर्व जूनों में तू सरदार जूनी (योनि) है और सब जूनें तेरी सेवा के लिये बनाई गई हैं। यहां तक बयान किया है—

भई प्राप्त मानुख देहुरिया।।

मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है। जितने चराचर जीव हैं, सब इसकी ख्वाहिश (इच्छा) करते हैं मनुष्य जीवन पाने की। यहाँ तक बयान किया है—

जिस देही को सिमरें देव।। सो देही भज हरि की सेव।।

देवी और देवता भी जिस मनुष्य जीवन को पाना चाहते हैं, अरे भई, तुम को वह मनुष्य जीवन मिला है, अब उस प्रभु को पाने का वक्त है, उस को पा लो। मुक्ति को पाने के लिए मनुष्य जीवन सबसे ऊँचा गिना गया है। फिर आगे और इसका बयान करते हैं कि मनुष्य जीवन किस लिये हम को मिला? उस की गर्ज़ (मतलब) बयान करते हैं, क्यों ऊँचा गिना है।

(10) नरक स्वर्ग अपबर्ग निसेनी। ग्यान बिराग भगति सुभ देनी।।

कहते हैं, नर्क और स्वर्ग और मोक्ष के पाने की यह सीढ़ी है। नर्कों में जाने के सामान कर लो, स्वर्गों में जाने के सामान कर लो या मोक्ष के कर लो, मनुष्य जीवन में तुम ये तीनों काम कर सकते हो। पिछले प्रारब्ध कर्मों के अनुसार मौजूदा जन्म मिलता है। इसमें हमको थोड़ी आज़ादी है, जो क्रियमान कर्म हम करते हैं, जिस तरफ तुम डालना चाहो, लाईन डाल दो, आगे की हालत तुम बदल सकते हो। **Man is the maker of his own destiny.** इन्सान अपनी किस्मत आप बनाता है। पीछे जो किया, अब भोग रहे हैं । अब जो थोड़ी आज़ादी है, उसमें अगर अब ठीक कर लो। नर्कों की तरफ जाने के सामान हैं, इन्द्रियों के भोगों-रसों में, लोगों को दुख दो । स्वर्ग जाना है तो लोगों को सुख पहुँचाओ। अगर जन्म-मरण से रहित होना है तो अभी इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ जाओ, उस रस को पा जाओ, ये रस (इन्द्रियों के भोगों के रस) फीके पड़ जायेंगे, आना-जाना खत्म जो

जायेगा। तो तीन चीज़ें आप मनुष्य जीवन पाकर कर सकते हैं।

(11) सो तनु धरि हरि भजहिं न जे नर। होहिं बिषय रत मन्द मन्द तर।।

कहते हैं, ऐसा मनुष्य जीवन पा कर जो हरि की पूजा नहीं करते, हरि का भजन नहीं करते—

भई परापति मानुख देहुरीआ।। गोविंद मिलण की एह तेरी बरीआ।।

सब महापुरुष यही कहते हैं, **It is thy turn to meet God.** मनुष्य जीवन पाकर अगर यह आत्मा को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करके, आने-जाने के जो कारण हैं, उन से हटा करके प्रभु से नहीं जोड़ लेता, इस का मनुष्य जीवन सफल नहीं होता। तो कहते हैं कि वे लोग विषयों में मस्त होकर महामूर्ख और मूढ़ बन जाते हैं। गुरु अमर दास जी साहब ने एक जगह कहा—

धिगु धिगु खाइआ धिगु सोइआ।।
धिगु धिगु कापडु अंग चढ़ाइआ।।

हमारे खाने पर, सोने पर, जिस्म की बाहरी बनावटें, हार-शृंगार बनाने पर हज़ार-हज़ार बार लानत है। फिर कहा—

धिगु सरीर कुटुम्ब सहित सिऊ

इस मनुष्य जीवन को धारण करने पर भी हज़ार-हज़ार बार लानत है अगर बाल-बच्चों का ही काम करता रहा, इन कामों पर भी हज़ार बार लानत है,

जितु हुणि खसमु न पाइआ।।

अगर मनुष्य जीवन पाकर उस प्रभु को नहीं पाया तो जितने काम किये उन सब पर हज़ार बार लानत है।

अवरि काज तेरै कितै न काम।।
मिलु साध संगति भजु केवल नाम।।

साधु संग करो भई, मालिक के साथ जुड़ो, यह मनुष्य जीवन का आदर्श है। अगर मनुष्य जीवन पा कर यह काम नहीं किया तो जन्म बरबाद चला गया।

खसम न चीन्हे बावरी काहा करत बड़ाई।

कबीर साहब कहते हैं, मनुष्य जीवन पाकर तुम किस बात की बड़ाई करते हो, अगर मनुष्य जीवन पाकर उस मालिक को तुमने नहीं पाया।

बातन भगत ना होयेंगे छाडो चतुराई।।

यह बातों का मज़मून नहीं है भई, चतुराई की बातें छोड़ो। देखो, तुम क्या कर रहे हो? नर्कों के जाने का सामान कर रहे हो या स्वर्गों का या मोक्ष का? यह सोचो। रेलवे लाइन डालने से पहले आपको अख्तियार है, जिस तरफ लाईन चाहो, डाल लो। एक बार डाल दी गई तो ट्रेन उसी पर चलेगी। मनुष्य जीवन में थोड़ी आज़ादी है, विवेक बुद्धि प्रभु ने दी है, एक लाईन **draw** करो (एक लकीर खैंच दो) इधर या उधर, यह **make** (बना) या **unmake** (बिगाड़) कर सकता है। देख लो, आप क्या कर रहे हो? बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिलता है, इस को पा कर ये तीनों चीज़ें तुम कर सकते हो। अगर मनुष्य जीवन पाकर आप ने हरि को नहीं पाया, उसका भजन नहीं किया, अपनी आत्मा को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करके उसके साथ जुड़े नहीं, मनुष्य जीवन बरबाद चला गया।

पउड़ी छुटकी फिरि हाथि न आवै अहिला जनमु गवाइआ।।

एक बार मनुष्य जीवन की पौड़ी हाथ से निकल गई, यह जन्म तो

बरबाद गया। फिर या नसीब मनुष्य जीवन आप को मिले और फिर तुम यह काम कर सको। तो मनुष्य जीवन का पाना बड़े भाग्य से होता है। इसको पाकर जो लोग प्रभु की भक्ति नहीं करते, मोक्ष को नहीं पाना चाहते, नर्कों और स्वर्गों का सामान कर रहे हैं, अरे भाई, वे जन्म को बरबाद कर रहे हैं। कुरान-शरीफ में ज़िक्र आता है कि जो इस दुनिया के आशिक (प्रेमी) लोग हैं, उन को परलोक हराम है और जो परलोक, आखरत के पुजारी हैं उनको यह दुनिया हराम है और प्रभु के पुजारियों को दोनों हराम हैं। बताओ आप क्या कर रहे हो? सोचो। महापुरुषों के कलाम (वचन) बड़े मतलब-खेज़ (गूढ़) होते हैं, पुर-मायनी (अर्थ-युक्त), पुरमग़ज होते हैं। साथ-साथ समझाते चले जाते हैं । अरे भई, यह तीनों ही चीज़ों को पाने की सीढ़ी है। मनुष्य जीवन तुम क्यों चाहते हो? इसमें तुम ने प्रभु को पाना था। क्या कर रहे हो? ज़रा ठण्डे दिल से विचारो। कई भाई रोटियां दान करते हैं इस लिये कि आगे हमें रोटियाँ मिलेंगी। यहाँ जूती देते हैं कि आगे हमें जूतियां मिलेंगी। अरे भाई, फिर परलोक के पुजारी तो न हुए, आना-जाना तो खत्म न हुआ। मनुष्य जीवन की यह गर्ज़ न थी।

(12) काँच किरिच बदलें ते लेहीं। कर ते डारि परस मनि देहीं।।

कहते हैं, वे जाहिल लोग हैं, मूढ़ पुरुष हैं जो पारस पत्थर को फेंक देते हैं। पारस पत्थर मिल जाये, उसको जो फेंक दे, उस को अकलमन्द आप कहोगे? उससे तो सोना बनता है भई। मनुष्य जीवन बड़े भाग्य से मिला है, इसमें तुम अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ सकते हो। जो इस को पाकर इससे फायदा नहीं उठाते, वे ऐसे ही हैं जैसे सोने के इवज़ (बदले में) शीशा ले लो, कांच ले लो। तो मनुष्य जीवन पाने की यह कद्र बयान कर रहे हैं कि मनुष्य जीवन पाने की यह कद्र है। वे जाहिल लोग हैं, मूढ़ पुरुष हैं जो इससे फायदा नहीं उठा रहे हैं। देखो, साथ ही

साथ डिग्री दिये जा रहे हैं। यही और और महापुरुष भी कहते हैं। फरमाते हैं—

झलके उठि पपोलिए विणु बूझे मुगध अजाणि।।

सुबह उठ कर जिस्म के पालने और इसके ताल्लुकात के बनाने ही में सारा जीवन बसर कर रहे हैं, उस प्रभु को नहीं जाना, यह जानते हुए कि मनुष्य जीवन चंद रोज़ा है, आखिर छोड़ जाना है। तो कहते हैं, ऐसे लोग कौन हो सकते हैं? या मूढ़ों के मूढ़ या अनजान बच्चे, इन दोनों में एक ज़रूर हैं। सारे महापुरुष यही कहते हैं —

प्राणी तूं आइआ लाहा लैणि।
लगा कितु कुफकड़े सभ मुकदी चली रैणि।।

ऐ प्राणधारी इन्सान! तू दुनिया में आया था यह परम अर्थ हासिल करने के लिए, तू किन फजूल (व्यर्थ) कामों में लग गया? वे फजूल काम कौन से हैं? कबीर साहब ने ज़िक्र किया है रावण का। कहते हैं, सोने की लंका थी, समझे। कुदरत की ताकतों को अपने कब्ज़े में लाया था। फिर कहते हैं, 'मूर्ख रावण क्या ले गया?' वह मूर्ख था, क्या ले गया यहाँ से? जिस्म साथ आता है, पैदा होते हुए यह पहला संगी और साथी है, पर जाते हुए साथ नहीं जाता। अरे भई, वे चीज़ें जो इस जिस्म करके बनी हैं, वे कैसे साथ जायेंगी? जो इन्हीं में लग रहे हैं, अरे भई वे मूढ़ लोग हैं, नासमझ लोग या अनजान बच्चे हैं। बड़े प्यार से समझा रहे हैं।

(13) नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं। सन्त मिलन सम सुख जग नाहीं।।

यह तो एक सवाल का जवाब दिया। समझे? क्या खूबसूरती से जवाब दिया है। अब दूसरा और तीसरा सवाल आ जाता है, कि दुनिया में

दुख सबसे बड़ा कौन सा है और सुख सबसे बड़ा कौन सा है और सुख किस बात में है? तो कहते हैं, मुफलिसी (गरीबी) से ज़्यादा मुसीबत दुनिया में कोई नहीं है। गरीबी सब पापों की ज़मीन बन जाती है। **Beg, borrow or steal** (भीख मांगो, उधार लो या चुराओ), समझे? खरीद सकता नहीं, कर्ज़ कोई देता नहीं, वह चोरी पर गिर जाता है। अपने धर्म से, असूल से गिर जाता हैं। अरे भई, ज़र (धन) और ज़न (स्त्री) की पुजारी दुनिया बन रही है। देखिये, यह बीमारी सब जगह है। नादारी, मुफलिसी, गरीबी सबसे बड़ा दुख है। इसमें इन्सान क्या कुछ नहीं करता? वे काम करता है जो नहीं करना चाहता। बच्चे भूखे मरें तो क्या करे? चोरी करेगा। अपनी भूख तो शायद सहार जाये मगर बच्चों की नहीं सहार सकता है। कहते हैं, यह बड़ा भारी दुख है, समझे। आप देखिये, पैसे कमाने के लिए, मुफलिसी को दूर करने के लिए लब-लालच में गिर जाता है। तो संयम का जीवन होना चाहिये।

घालि खाइ किछु हथहु देइ।। नानक राहु पछाणहि सेइ।।

जिसकी रोज़ी ही परागन्दा (कमाई खराब) है—

परागन्दा रोज़ी, परागन्दा दिल

यह सबसे बड़ा दुख है दुनिया में। इस को रोटी मिलती रहे, फिर वह संयम में रह सकता है। लब-लालच न करे, जीवन संयम का बनाये, प्रभु की भक्ति करे, पेट में रोटी पड़े तभी।

पेट न पइयां रोटियां ते सबे गल्लां खोटियां।

यह पंजाबी मिसाल है। तो बड़े प्यार से कहते हैं कि मुफलिसी (गरीबी) सब से बड़ा दुनिया में दुख है और सन्तों के मिलाप से ज्यादा कोई सुख नहीं है। सबसे बड़ा सुख कहाँ मिलता है? सन्तों की सोहबत में। सन्त मिलते कहाँ हैं? **So-called** (तथा-कथित) सन्त तो बड़े

मिलेंगे, सचमुच सन्त कहीं-कहीं मिलेगा। सन्त की तारीफ की गई—

हमरो भरता बड़ो बिबेकी आपे संतु कहावै।।

जब वह परमात्मा किसी पोल (मनुष्य देह) पर इज़हार करता है, उसका नाम सन्त है। उसके पास क्या है?

चारि पदारथ जे को मांगै। साध जना की सेवा लागै।।

चारों पदारर्थ उसके पास हैं— धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। बड़ी भारी बरकत है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि सबसे बड़ा सुख दुनिया में सन्तों की सोहबत में है। परमात्मा के चरणों में जाने में सबसे बड़ा सुख है मगर जब तक उसको (परमात्मा) देखा नहीं, फिर? **Guru precedes God.** जिसमें वह (प्रभु) प्रकट है उसकी सोहबत में ठण्डक मिलती है, वह सबसे बड़ा सुख है । झुलसा हुआ इन्सान धूप से जब एक सायादार दरख्त के नीचे आ जाता है तो ठण्डक को पा जाता है, होश आ जाती है।

बडुआ अगन सगले तृण जाले कोई विरला बूटा हरयो री।।

बड़वा अग्न (अग्नि) ने सारे दरख्तों को जला रखा है। कहीं कहीं कोई सरसब्ज़ (हरा-भरा) दरख्त है। कौन? कोई अनुभवी पुरुष, जिसके अन्तर प्रभु प्रकट है। वहाँ जाकर ठण्डक और राहत मिलती है।

जित मिलिऐ मनि होए अनन्दा सो सतिगुरु कहीऐ।।

जिसके पास बैठने से थोड़ी ठण्डक मिले, टिकाव मिले, दुनिया भूल जाये, यह निशानी है, समझे?

दिला नज्दे बिनशीं कि ओ अज़ दिल खबर दारद

ऐ दिल! किसी ऐसे की नज़दीकी अख्तियार कर जिसको हमारे हाल

का पता हो कि हम किस मुसीबत में गिरफ्तार हैं। क्या करो?

बज़ेरे आं दरख्ते रौ बरो गुलहाये तर दारद

किसी ऐसे दरख्त के नीचे बैठो जिस पर तरो-ताज़ा फूल महक रहे हों। दुनिया में झुलसा हुआ इन्सान जब वहाँ बैठता है, थोड़ी ठण्डक उस मंडल में मिलती है, चार्जिंग है उसमें। कहते हैं, सन्तों की सोहबत जैसा कहीं सुख नहीं। वहाँ और क्या होता है?

सुभर भरे प्रेम रस रंगि।। उपजै चाउ साध कै संगि।।

वे प्रभु के प्रेम और रस और नशे के **overflowing cups,** (उभर-उभर के डुलने वाले प्याले) होते हैं। उनको देखने से प्रभु का चाव बनता है, पहली बात। फव्वारा चल रहा हो, उस के गिर्दा-गिर्द (चारों ओर) जो लोग बैठे हों, जो हवा पानी के फव्वारे से लग कर आये, ठण्डक देती है कि नहीं? उस के मण्डल में बैठने से टिकाव मिलता है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं। फिर कहा—

महा पवित्र साध का संग।। जिसु भेटत लागै हरि रंग।।

साधु की संगत महा-पवित्रता के देने वाली है जिसके साथ भेंट करने से, मिलने से नहीं भाई, भेंट करने से, दिल दिल को राह बनाने से प्रभु का नशा आ जाता है। **Spirituality cannot be taught but caught,** रूहानियत सिखाई नहीं जाती बल्कि छोह (छूत) की तरह पकड़ी जाती है, रंग आ जाता है, नशा आ जाता है। चैतन्य महाप्रभु का वाकेआ है। उनका बोला था 'हरि बोल।' महात्माओं के (अपने-अपने) बोले होते हैं, उसी प्रभु के नाम के बोले होते हैं। तो वे 'हरि बोल' कह करके बोला करते थे-'हरि बोल, हरि बोल।' एक धोबी ने समझा कोई पैसा माँगने वाला आ गया, उस ने न बोला। एक बार भी न

बोला, दोबारा उन्होंने कहा— चार-छः बार कहा, नहीं बोला। उसने फिर सोचा, यह पीछा छोड़ता नहीं, चलो 'हरि बोल' कह दें, क्या है? जब 'हरि बोल' कहा, तवज्जो मिल गई, नाचने लग गया— 'हरि बोल, हरि बोल'। वह भी नाचने लग गया । साथ के भाइयों ने देखा भई, हमारे भाई को क्या हो गया? आ के कहे, 'हरि बोल' भई। वे भी 'हरि बोल' कहने लग गये । सारा धोबी घाट ही नाच उठा। यह रंग मिलता है अनुभवी पुरुषों की सोहबत से।

तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि सन्तों की सोहबत जैसा कोई सुख नहीं। सबसे बड़ा सुख सन्तों की सोहबत में है समझे। जब तुम (वहाँ) आ गये, समझो प्रभु की सोहबत में आ गये क्योंकि प्रभु उसमें प्रकट हो रहा है। बिजली हर जगह परिपूर्ण है, बताओ अब आपका क्या सँवारती है पर अगर किसी पोल पर वह पावर हाऊस से **connect** हो (जुड़) जाए तो वह तुम्हारे सारे काम करती है कि नहीं? तो प्रभु सारे हृदयों में है मगर जिस हृदय में वह प्रकट हो गया उससे तुम्हारे सारे काम बनते हैं, उसके चरणों में जाओ। मौलाना रूम साहब ने कहा कि अगर तुम किसी वली-अल्लाह के नज़दीक आ गये तो समझो तुम प्रभु के नज़दीक आ गये । क्यों? उसमें वह (प्रभु) है, वह पोल है जिसमें वह इज़हार कर रहा है, समझे। अगर तुम किसी वली-अल्लाह (महात्मा) से दूर हो गये तो समझो तुम प्रभु से दूर हो गये। उससे दूरी प्रभु से दूरी है, उससे नज़दीकी जो है, वह प्रभु की नज़दीकी है । अब आप समझे? जो जवाब दे रहे हैं बड़ी खूबसूरती से दे रहे हैं कि सबसे बड़ा दुख मुफलिसी, नादारी, गरीबी, मुहताजी सबसे बड़ा गुनाह है और सब से बड़ा भारी सुख सन्तों की सोहबत में है।

(14) पर उपकार बचन मन काया। सन्त सहज सुभाउ खगराया।।

तीन हो गये सवाल। अब यह चौथा सवाल है कि सन्त और असन्त में क्या भेद है। क्या स्वभाव होता है उनका? कहते हैं, मन, वचन और कर्म से परोपकार करना, यह सन्तों का सहज स्वभाव है। मन से भी, वचन से भी और कर्म से भी। यह नहीं कि मन से बुरा सोचें। मन से भी भला सोचते हैं।

नानक नाम चढ़दी कला।।
तेरे भाणे सरबत का भला।।

Peace be unto all the world over. यह उन की भावना है, यह उन का मिशन है, समझे। उस से (प्रभु से) प्यार करो, वह सब में है, सबसे प्यार करो। आप जुड़े हैं, लोगों को जोड़ते फिरते हैं।

गुरुमुख कोटि उद्धारदा दे नावें इक कणी।।

यही उनका काम होता है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि ऐ गरुड़! यह सन्तों का सहज स्वभाव है, मन करके, वचन करके और कर्म करके उपकार करना। वचन करके भी वही काम कहेंगे जो परोपकार से ताल्लुक रखता हो और कर्म करके भी परोपकार करेंगे, दुखियों के दुख दूर करेंगे, भूखों की भूख-प्यास दूर करेंगे, यह उनका काम रहता है। यह स्वभाव है उनका कुदरती। कोई नेक काम करे या बद करे, दूसरों के लिए परोपकार का कायदा, अपने सुखों को छोड़ कर दूसरों के सुखों के लिए अपने सुखों को कुर्बान कर देना, इस का नाम है परोपकार। सन्तों का परोपकार सबसे बड़ा है। आप देखिए।

हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) एक मिसाल दिया करते थे, फरमाया करते थे कि एक जेलखाना है, उस में कैदी लोग रहते हैं। एक आदमी वहाँ गया। उसको बड़ा रहम आया कि इन बेचारों

को रोटी अच्छी नहीं मिलती है। तो वहाँ कुछ रुपया दे दिया कि इन को आगे से अच्छा खाना मिला करे। वह परोपकार कर आया। उसके बाद एक और भाई गये, बड़े परोपकारी थे। उन्होंने देखा, इनको कपड़े अच्छे पहनने को नहीं मिल रहे, सर्दियों का मौसम है, नंग-धड़ंग हैं। उन्होंने रुपया **sanction** (मंजूर) कर दिया और आ गये, कपड़े अच्छे मिलने शुरू हो गये। एक और भाई गया कि ये काल कोठड़ियों में रहते हैं, अँधेरी कोठड़ियाँ हैं, कोई सफाई का सामान नहीं। कहने लगा, ''इन को अच्छे मकान बना दो, **well ventilated** (रोशनदान) और सफाई का सामान कर दो,'' रुपया **sanction** (मंजूर) कर दिया। वह भी परोपकार कर आया। तीनों गये, परोपकारी, परोपकार तो किया मगर कैदी, कैदी के कैदी ही रहे। खाना देना, कपड़े देना, रहने-सहने को अच्छी जगह दे देना, ये तो भाई सभी करते हैं। ये भी लोग बड़े दुर्लभ हैं। मगर इससे बड़ा एक और परोपकार है जो सन्त करते हैं। वह क्या है? एक आदमी आया। उस के पास जेलखाने की कुंजी थी। उसने दरवाज़ा खोला और कहा कि निकल जाओ सब। वे (सन्त) तन के पिंजरे से आज़ाद करते हैं, जन्म-मरण से छुड़ाते हैं, प्रभु से जोड़ते हैं। यह उनका सबसे बड़ा परोपकार है। तो कहते हैं, संतजन मन, वचन और कर्म से परोपकार करते हैं। यह उनका सहज स्वभाव होता है, स्वभाव में शामिल है। कोई बुरा करे तो भी वे अच्छा करेंगे। समझे? आगे इसी मज़मून को और खोलते हैं।

(15) संत सहहिं दुख पर हित लागी। पर दुख हेतु असन्त अभागी।।

कहते हैं, सन्त का एक यह स्वभाव हुआ। दूसरा यह है कि दूसरों को सुख पहुंचाने के लिए आप दुख भी सह लेते हैं। आप को पता हो वाल्मीकि कैसे सन्त बने, महर्षि कैसे बने? डाकू थे। सन्त एक गुज़र रहे

थे। तो उसने देखा कि यह कोई शिकार है। वह उन को लूटने लगा और मारने लगा। कहने लगे, ''मारो नहीं। किस लिए मारते हो? जो कुछ लोगे, घर वालों को दोगे। तुम यह पाप करते हो न?'' कहने लगा, ''हाँ।'' ''फिर तुम यह तो सोचो कि तुम्हारे इस पाप में कोई तुम्हारा हिस्सेदार भी है कि नहीं?'' कहने लगा, ''मेरे घर वाले सब हैं।'' कहने लगे, ''भाई, तुम ऐसा करो, तुम जाओ, घर वालों से पूछ आओ कि क्या वे तुम्हारे इस पाप का हिस्सा बाँटेंगे?'' कहने लगा, ''वाह! भई, यह अच्छा आदमी मिला, मैं जाऊँ घर, यह जाये भाग।'' महात्मा कहने लगा, ''नहीं, मैं भागता नहीं, मुझे दरख्त से बाँध दो अच्छी तरह से। तुम घर से सिर्फ पूछ लो, फिर जैसे होगा, कर लेना।'' उसने कहा, भई बात तो ठीक है, चलो पूछ आते हैं। उसको बाँध गया दरख्त के साथ। घर गये, पूछने लगे, ''अरे भाई, मैं इतना पाप जो करता हूँ, लोगों के गले काटता हूँ, मारता हूँ, लूट-खसूट करता हूँ, बताओ यह पाप है न, तुम मेरा हिस्सा बाँटोगे?'' कहने लगे, ''हम क्यों हिस्सा बाँटें? हमें तो रोटी चाहिये, जहाँ से मर्ज़ी है, लाकर दो।'' जवाब मिल गया, आ गये, खोला दरख़्त से, ''महाराज, मुआफ करो।''

तो सन्त अपने आप को बँधवा भी लेते हैं इस लिये कि कोई सुखी हो जाए, यह स्वभाव है उनका। दूसरों के सुख की खातिर अपना आराम छोड़ते हैं। समझे? गुरु नानक साहब थे। घर से निकले, घर-बार छोड़ा, बच्चों को छोड़ा। अरे भई, कहाँ कहाँ नहीं गए? किस लिये? दूसरों के सुख के लिये। उन के दो लड़के थे, सास ने उन्हें खड़ा कर दिया। कहने लगी, ''देख नानक! तूने अगर यही कुछ करना था तो ये बच्चे क्यों पैदा किये?'' दुनिया भी दो मुँही सर्पनी है, बड़ी बुरी तरह से पेश आती है। कहने लगे, ''माता! जिन मोह के बन्धनों में तू मुझे फँसाना चाहती

है, मैं दुनिया को उन बन्धनों से आज़ाद करने आया हूँ।''

जगत जलन्दा रख लै प्रभु आपन किरपा धारि।।

जगत में आग लग रही है, हे प्रभु! इसको बचा लो। इन्सान वही है जो दूसरों के लिये जीये। अपने लिये तो कुत्ता भी अपना पेट भर लेता है। तो सन्त का स्वभाव है परोपकार करना— मन, वचन और कर्म करके। मन कर के भी यह नहीं कि किसी का वे बुरा सोचते हैं। वे दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए आप दुख भी उठाते हैं। किस लिये? उनका प्रेम है प्रभु से। और प्रभु सब में है, इस लिए। और जो असन्त हैं, वे बदनसीब हैं। वे दूसरों को दुख देने के लिए आप दुखी होते हैं। सौ मुसीबत उठायेंगे, दूसरे का घर जल जाये ज़रूर। फर्क हुआ कि नहीं? ***एक दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए दुख उठाते हैं, एक दूसरों को दुख पहुँचाने के लिए दुख उठाते हैं। कहते हैं, यह स्वभाव है भई सन्तों का और असन्तों का।*** आगे और मिसाल दे कर समझायेंगे। गौर से सुनो।

(16) भूर्ज तरु सम सन्त कृपाला। परहित निति सह बिपति बिसाला।।

कहते हैं, सन्तजन दयालु पुरुष होते हैं भोजपत्र के दरख्त की तरह। वे औरों की भलाई के लिए रोज़ सख्ती और मुसीबतें झेलते हैं। भोजपत्र, आप को पता हो, कैसे छालें उतारी जाती हैं, छीले जाते हैं, यानी अपने आप को छिलवा भी लेते हैं ताकि लोगों के सुख का कारण बनें। भोजपत्र के कपड़े पहना करते थे ऋषि, मुनि, महात्मा कभी। कहते हैं, वे ऐसे हैं सुख देने के लिए, और दूसरे लोग जो हैं—

(17) सन इव खल पर बन्धन करई। खाल कढाइ विपति सहि मरई।।

और जो असन्त लोग हैं, वे सण की तरह हैं, खाल उतरवाते भी हैं मगर किस लिये? कि रस्सा बन कर लोगों को बाँधा जाये। बात वही है। मिसाल देकर समझाने का यत्न कर रहे हैं कि जो असन्त हैं लोगों को दुख देने के लिये अपने आपको छिलवा भी लेंगे, दूसरों को दुख पहुँचे सही, दूसरे के घर के साथ पहले अपने घर को जलाने के लिए तैयार हैं। मगर सन्तजन अपना घर तो जला लेते हैं दूसरों को आबाद कर देंगे। यह फर्क है। देखो, कहाँ मिलता है। समझे? ये सन्तों और असन्तों के लक्षण हैं, स्वभाव हैं। सन्तों की कोई गर्ज़ नहीं, वे लागर्ज़ हैं। सिर्फ प्रभु के हुक्म के अन्तर काम करते हैं। उनका काम ही है बिछुड़ी हुई आत्माओं को मन-इन्द्रियों से आज़ाद करके प्रभु से जोड़ना। यह उनका काम है। पापी से पापी लोग उनके चरणों में जा कर डाकुओं से महर्षि बन जाते हैं। मौलवी रूम साहब बड़े आलिम-फाज़िल थे। उन्होंने क्या किया? स्कूल में पढ़ाया करते थे। एक दफा शम्स तबरेज़ साहब, अनुभवी पुरुष थे, आ गये। वहाँ किताबें पड़ी थीं। पूछा, ''ई चीस्त?'' ''यह क्या कर रहे हो, भई?'' तो जवाब दिया, ''ई हाल अस्तो नमी फ़हमी।'' कहने लगे, ''अरे भई! यह ऐसा इल्म है, तुम को क्या पता यह क्या है?'' खैर, वे चले गये। स्कूल की छुट्टी हुई तो उन्होंने (शम्स तबरेज़ ने) तख्तियां, जो धोने वाला चौबच्चा था पानी से भरा हुआ, सब किताबें, कलमें उसमें डाल दीं। जब आये (मौलवी रूम साहब), तो देखा, किताबें नहीं थीं। पूछा, ''अरे भई, ये किताबें कहाँ हैं?'' एक निकाली, सूखी किताब, दूसरी निकाली, तीसरी निकाली, तख्ती वगैरा सब सूखी, और पानी से निकल रही हैं। कहने लगे (मौलवी रूम), ''ई चीस्त?'' ''यह क्या है भई?'' कहते हैं, ''ई हाल अस्तो नमी फहमी।'' ''अरे भई, यह ऐसा इल्म है, जिसका तुम को पता नहीं।'' तो आलिमों और अनुभवी पुरुषों में बड़ा

भारी फर्क है। अब आप देखेंगे कि मौलवी रूम को मौलाना रूम बनाने के लिये उन्होंने (शम्स तबरेज़ ने) कितने दुख सहे। लोगों की मुखालिफत (विरोध) भी सही, सब कुछ किया, आखिर जान भी दे दी। तो बड़े प्यार से समझाते हैं। आखिर क्या कहा मौलवी रूम ने?

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाये रूम

मौलवी हरगिज़ मौलाना रूम न बन सका,

ता गुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद

जब तक शम्स तबरेज़ का गुलाम न बना। अरे भई, इसलिए हम संतों के पास जाते हैं कि जिस गति को उन्होंने पाया, हम भी पा जायें। असल मतलब तो यही है। तो यहाँ तक कहा—

बया साक़ी इनायत कुन तो मौलानाये रूमी रा

ऐ मुर्शिद (गुरु)! तू मुझ पर दया कर, मुझ पर रहम किया कर कि मैं—

गुलामे शम्स तबरेज़म कलन्दर वार में गोयम

मैं सारी दुनिया से कहूँ, मैं भई शम्स तबरेज़ का गुलाम हूँ। सिख (शिष्य) को मान होता है गुरु का, समझे। मैं फलाने गुरु का शिष्य हूँ। गुरू पूर्ण हो तो इसमें बड़ी शोभा है। देखिये, कोई भी हो, आम असूल यही है। शिष्य गुरु से पढ़ता है। कोई नई बात नहीं। वह इल्मे-रूहानी है, इल्मे-लुदनी है, पराविद्या है जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर मिलती है और बाहरी इल्मों का ताल्लुक इंद्रियों के घाट से है, **Where the world's philosophies end, there the religion starts.** जहाँ दुनिया के फिलसफे खत्म हो जाते हैं वहाँ से सच्चा परमार्थ शुरू होता है। वे उस राज़ के देने वाले हैं, इसलिये उनकी महिमा वेद, शास्त्र,

ग्रन्थ, पोथियाँ सभी गाते हैं। कहते हैं, ये सन्त और असन्त के लक्षण हैं, समझे।

(18) खल बिनु स्वारथ पर अपकारी। अहि मूषक इव सुनु उरगारी।।

अब कहते हैं कि ऐसे खोटे पुरुष, जैसे साँप और चूहा, जहाँ होंगे काटेंगे। चूहा कहीं भी हो, कुतर-कुतर करेगा, यह उसका स्वभाव है। ऐसे लोग दूसरों को नुकसान पहुँचाते रहते हैं। उनका क्या बनता है? बनता बनाता कुछ नहीं उनका, पर यह उनका स्वभाव है। चूहों का स्वभाव है कुतरना। चाहे कपड़ा मिल जाये, चमड़ा मिल जाये, लकड़ी मिल जाये, लोहा मिल जाये, काटेंगे। साँप का स्वभाव है काटना। कहते हैं, ऐसे ही खल पुरुषों का कायदा है। असन्त-जन जो हैं, वे दुख ही देना चाहते हैं। उन के स्वभाव में यह शामिल हो चुका है।

(19) पर संपदा बिनासि नसाहीं। जिमि ससि हति हिम उपल बिलाहीं।।

कहते हैं, दूसरों की दौलत को बरबाद करने के लिए आप भी तबाह हो जायेंगे मगर दूसरों को तबाह कर देंगे। ओले पड़ते हैं खेत पर, खेत बरबाद हो जाता है और आप भी नाश हो जाते हैं। मिसाल दे कर समझाया है।

(20) दुष्ट उदय जग आरति हेतू। जथा प्रसिद्ध अधम ग्रह केतू।।

फरमाते हैं कि ऐसे पुरुषों का दुनिया में आना ऐसा ही है जैसे केतु तारा मशहूर है। केतु आ गया भई, खैर नहीं। उस से सुख किसी को नहीं पहुँच सकता, समझे। ऐसा स्वभाव उन का है। उन से दुख ही दुख निकलेगा।

(21) सन्त उदय सन्तत सुखकारी। बिस्व सुखद जिमि इन्दु तमारी।।

सन्तों का प्रकट होना सुख देने वाला है। जैसे, कहते हैं, काली रात

हो, चाँद की ठंडी-ठंडी रोशनी सुख देती है, लोगों को ठंडक पहुँचाती है ऐसे उसका जीवन दुनिया में है।

(22) परम धर्म श्रुति बिदित अहिंसा। पर निन्दा सम अघ न गरीसा।।

अब कहते हैं, वेदों के मुताबिक 'अहिंसा परमो धर्मः', दूसरों का दिल न दुखाना यह सब से बड़ा धर्म है। यह सन्तों का स्वभाव है। **None violence** 'अहिंसा परमो धर्मः', यह सबसे बड़ा सुख देने वाला है, अहिंसा, किसी का बुरा चितवन न करना, न मन करके, न वचन करके, न कर्म करके।

जे तउ पिया मिलन दी सिक तां हिआ न ठाही केहीदा।।

अगर तुम प्रभु को पाना चाहते हो तो किसी दिल को न दुखाओ। यहाँ तक बयान किया है। हाफिज़ साहब एक जगह ज़िक्र करते हैं कि क्या करो? 'मय खरो,' शराब पी लो। यह पाप है बड़ा, कहते हैं, यह भी पी लो। इस से बढ़ कर और भी कोई पाप है। 'मय खरो, मुसहिफ बिसोज,' सब धर्म पुस्तकों को जला दो। यह भी पाप है बड़ा, कहते हैं, यह भी कर लो। इस से भी बड़ा और पाप है? 'आतिश दर काबा ज़न,' खुदा के घर में आग लगा दो। यह सब से बड़ा पाप है मगर इससे बढ़ कर और भी पाप है। 'साकिने बुतखाना बाश। हरचे कुन वलेकिन मरदमाजारी मकुन,' (किसी का) दिल न दुखाओ, दिलाज़ारी न करो, भई यह सबसे बड़ा पाप है। सारे महापुरुष यही कहते हैं। कहते हैं, दिलाज़ारी न करना, यह सबसे बड़ा धर्म है। और दूसरों की बुराई करने के बराबर और कोई पाप नहीं है, बस। यही सवाल था न कि दुनिया में कौन सा पुण्य सबसे बड़ा है, कौन सा पाप ज़बरदस्त है। यह है पाँचवाँ और छठा सवाल, उस का जवाब दे रहे हैं कि अहिंसा धारण करो भई, यह सबसे बड़ा धर्म है। अहिंसा परम धर्म है, यह वेदों में, सब महात्माओं

की वाणियों में आता है।

देखिये, प्रेम और अहिंसा साथ साथ चलते हैं। जिस का प्रेम होगा, उसके लिए अहिंसा होगी। जिसके साथ प्रेम हो, तुम उसको कभी दुख दोगे? कभी दुख नहीं दोगे। यह निशानी है प्रेम की। ये दो **phases** (पहलू) हैं एक ही चीज़ के। तो सन्तों-महात्माओं ने, वेदों-शास्त्रों ने कहा, तुम परमात्मा से प्रेम करो। परमात्मा सब में है, सब से प्रेम करो। जब सब से प्रेम करोगे तो दुख किस को दोगे? तो अहिंसा सब से बड़ा पुण्य है और दूसरों की बुराई करना, यह सबसे बड़ा पाप है, बस। यह छठे सवाल का जवाब दिया है। एक और सातवाँ सवाल रह गया। उस का जवाब तो बहुत लम्बा है, मगर खैर, थोड़ा इसके साथ—

(23) हर गुरु निन्दक दादुर होई। जन्म सहस्र पाव तन सोई।।

अब कहते हैं कि विष्णु और गुरु की निन्दा करने वाले मेंडक का शरीर हज़ार जन्म तक धारण करते हैं। बयान है सन्तों का।

(24) द्विज निंदक बहु नरक भोग करि। जग जनमइ बायस सरीर धरि।।

ब्राह्मण यानी अनुभवी पुरुषों की निंदा करने वाले, कहते हैं नर्क भोग कर फिर कौवे का जन्म लेते हैं। इसलिए इन को, काकभुशुंडि को कौवे का जन्म दिया है। यह भी गुरु की सिफारिश करने पर, यह रियायत की, चलो भई, कौवे बन जाओ, नर्क में न जाओ।

(25) सुर श्रुति निंदक जे अभिमानी। रौरव नरक परहिं ते प्रानी।।

कहते हैं, जो देवताओं और वेदों, धर्म-शास्त्रों की निन्दा करते हैं, कहते हैं, वे मगरूर (अभिमानी) पुरुष हैं, वे सब रौरव, जो सबसे बड़ा नर्क है, उस में जाते हैं।

(26) होहिं उलूक सन्त निन्दा रत। मोह निसा प्रिय ग्यान भानु गत।

कहते हैं, सन्तों की निन्दा करने वाले तो उल्लू बनते हैं। उल्लू का क्या कायदा है? अँधेरा उसको पसन्द है, दिन अच्छा नहीं लगता। ऐसे ही जो निंदक पुरुष हैं, वे सन्तों की हमेशा **dark side** लेते हैं। उन को अज्ञानता पसन्द है, ज्ञान पसन्द नहीं, इस लिए वे उल्लू की योनि में जायेंगे।

(27) सब कै निन्दा जे जड़ करहीं। ते चमगादुर होइ अवतरही।।

कहते हैं, सन्तों की निंदा करने वाले तो उल्लू की योनि में जाते हैं। जो सब की निंदा करते हैं वे चमगादड़ की योनि में जाते हैं। चमगादड़ आपको पता है, रात को लटकते हैं उलटे दरख़्तों के साथ। चाँदनी में उनको कोई रास्ता नहीं मिलता, भटकते फिरते हैं, दीवारों से टक्करें खाते हैं। यह निंदकों का हाल है।

निन्दा भली किसै की नाहीं मनमुख मुगध करंनि।।

कहते हैं, मनमुख जो लोग हैं, वे निन्दा करते हैं। निन्दा किसी की भली नहीं, न तो नेक की, न ही बद (बुरे) की। बद की भी निन्दा करोगे, अगर कीचड़ पर पत्थर फेंकोगे तो छींटे तुम ही पर पड़ेंगे न। **As you think, so you become.** जिसका चिंतन करोगे वैसे तुम बन जाओगे।

मुंह काले तिनां निंदकां नरके घोरि पवंनि।।

उनके मुँह काले होंगे, इस दुनिया में भी, अगली दुनिया में भी। घोर नर्क में वे जायेंगे। सारे महापुरुष एक ही बात कहते हैं।

(28) सुनहु तात अब मानस रोगा। जिन्ह ते दुख पावहिं सब लोगा।।

अब सातवाँ सवाल रह गया कि मानस (मन के) रोग कौन-कौन से हैं जिन में सब दुनिया गलतान है। अज्ञानता सबसे बड़ा रोग है। इस से

हर एक किस्म के दुख बार-बार पैदा होते हैं, अज्ञानता से होते हैं। अगर **right understanding** हो जाये, सहीनज़री हो जाये, वह क्या है? हम आत्मा देहधारी हैं, देह का रूप बन गये, अज्ञानता में आ गये कि नहीं? 'एह शरीर मूल है माया।' भूल यहाँ से शुरू हुई, सारी उम्र जिस्म और इसके ताल्लुकात में ही लम्पट रहे, आना जाना बना रहा, यह सब दुखों का मूल है शरीर।

देह धर सुखिया कोई न देखा जो देखा सो दुखिया हो।।

देह धारण करके किसी को सुखी नहीं देखा, जो भी देखा, सब को दुखी देखा, यह कबीर साहब कहते हैं। तो बड़े प्यार से समझा रहे है कि अज्ञानता सब दुखों की जड़ है। इस से बार-बार दुख पैदा होते हैं।

(29) मोह सकल ब्याधिन्ह कर मूला। तिन्ह ते पुनि उपजहिं बहु सूला।।

कहते हैं, अज्ञान के सबब से जिस्म बन गया (अपने आप को आत्मा की बजाय जिस्म का रूप समझने लगा), जिस्म के साथ मोह बन गया, ताल्लुकात के साथ सब दुखों का मूल बन गया। यहीं से जड़ शुरू है। अगर हम जिस्म के ऊपर आना सीख जायें, महापुरुष क्या कहते हैं, जिस्म को छोड़ो, चलो ऊपर, तुम आत्मा देहधारी हो, आखिर जिस्म को छोड़ना है, अभी छोड़ना सीख जाओ। वे उस अविद्या की जड़ को काट देते हैं पहले दिन ही। तुम आत्मा हो देहधारी, देह नहीं, आखिर छोड़नी पड़ेगी। तो यहाँ से, कहते हैं, जिस्म का मोह बन गया, सब पापों का सामान बन गया।

(30) काम बात कफ लोभ अपारा। क्रोध पित्त नित छाती जारा।।

इन्सान के अन्तर तीन चीज़ें बयान की हैं, सुफरा (वात), बलगम (कफ) और सौदा (पित्त)। इन तीनों के संयम के न होने से बीमारियाँ

बनती हैं। इन तीनों के सबब से सीने में हमेशा जलन होती रहती है, छाती जलती रहती है। वायु बढ़ जाये, कफ़ बढ़ जाये और सौदा या पित्त बढ़ जाये, कहते हैं, काम जो है यह सफरा (वायु) है, लालच जो है वह बलगम है, गुस्सा जो है यह पित्त या सौदा है। जहाँ काम होगा, (वहाँ) लालच होगा और क्रोध होगा। काम, क्रोध और लालच या लोभ, तीन चीज़ें जिस इन्सान के अन्तर हैं, वह दुखी है। यह सब से बड़ा रोग है। ये मानस रोग हैं तीन। बाकी उसके साथ आगे मोह का बनना कुदरती बात है। मिल जाए तो उस को रखना चाहता है, उस को फिर पा कर मस्त होना चाहता है, उस को अहंकार कहते हैं। तो एक कामना से सब कुछ बना। यह चीज़ एक ही है याद रखो। जैसे पानी का एक नाला बह रहा हो बड़े ज़ोर से, तो बीच में एक पत्थर रख दो, पानी उस से टकरा कर दो चीज़ें बनती हैं, एक आवाज़ होती है और दूसरे झाग बन जाती है। अरे भई, जितनी कामना है—

जेती मन की कल्पना काम कहावे सोए।।

जितनी मन की कल्पनाएं हैं ये सब काम हैं। इनमें जब कोई रुकावट, ज़ाहिरा या दरपर्दा बनती है, वह क्रोध बन जाता है। अब क्रोधी पुरुष के मुँह से झाग आती है और आहिस्ता बोल नहीं सकता, ऊँचा बोलेगा, ये दो बातें उस में बन जाती हैं। जहाँ क्रोध है, ज़रूर पाना चाहता है, यह लोभ है। कुछ भी हो, वह पायेगा, इस का नाम लोभ है। ये तीन चीज़ें हैं हर इन्सान के अन्तर में। वात है, कफ है और पित्त है। तीन ही से बीमारियाँ बढ़ती हैं। कहते हैं, ये तीन चीज़ें जिस इन्सान के अन्तर हैं वह बड़ा भारी दुखी है, बड़े भारी रोग यही तीन हैं।

(31) प्रीति करहिं जौं तीनिउ भाई। उपजइ सन्यपात दुखदाई।।

अगर ये तीनों भाई—सुफरा, बलगम और सौदा या पित्त— अगर एक साथ प्यार करें तो फिर दुखदाई सरसाम हो जाता है, दिल-दिमाग ठिकाने नहीं रहते। सरसाम में आपको पता है, क्या होता है? सिर पर बुखार चढ़ जाता है, न सो सकता है, न देख सकता है। यह हालत दुनिया की हो रही है। काम, क्रोध और लालच के सबब से उनका दिल-दिमाग सही नहीं। कहते हैं, ये सबसे बड़े रोग हैं। तो महात्मा बुद्ध ने क्या इलाज बतलाया? **Be desireless.** कामना-विहीन हो जाओ। चलो। न कामना रहे, न क्रोध, न लोभ लालच रहेगा। कामना ही नहीं तो किस बात का क्रोध हो। हो हो, न हो, न हो। ये सन्तों के लक्षण हैं और इन्हीं की बाकायदगी न होने के सबब से लोग दुखी हैं।

(32) बिषय मनोरथ दुर्गम नाना। ते सब सूल नाम को जाना।।

कहते हैं, ये मुखतलिफ (विभिन्न) किस्म के रोग हैं जो हर एक इन्सान के अन्तर में हैं मगर लोग जानते नहीं हैं। हम क्यों दुखी होते हैं। एक मिसाल दिया करते हैं, कि कहीं एक दुकान लगी थी। काल आया, कहने लगा, बड़ी अच्छी दुकान है। कहते हैं कि अभी मैं बतलाता हूँ। उसने शहद थोड़ा लगा दिया दीवार के साथ। (उस पर) मक्खी आ बैठी। मक्खी को छिपकली खाने आई, छिपकली को कुत्ता खाने आया, कुत्ते को मालिक ने डंडा मारा, सारी दुकान बरबाद हो गई। अगर चेष्टा न हो, किसी चीज़ की कामना न हो तो बाकी चीज़ें कहाँ आयेंगी? तो एक ख्वाहिश के पैदा होने से, कामना के पैदा होने से सारे मानस रोग आ जाते हैं।

(33) ममता दादु कण्डु इरषाई। हरष बिषाद गरह बहुताई।।

ममता आ गई। नतीजा, कभी खुशी, कभी गमी। ममता में कोई चीज़ बनी रही तो सुख, टूटी तो दुख। और क्या? यह दुनिया के दुख

और सुख का कारण है।

(34) पर सुख देखि जरनि सोइ छई। कुष्ट दुष्टता मन कुटलई।।

यानी जब ममता आई तो खुदी आई, खुदी में खारिश पैदा होती है, समझे। रंज और दुख का कारण बन जाता है। और क्या कहते हैं? पराये सुख को देख कर जलना, यह भी बीमारी है, कहते हैं, यह तपेदिक की बीमारी है, समझे, जान ले मरेगी, और दिल की फितना-परदाजी, कुछ न कुछ शरारत पैदा करते रहना, यह कोढ़ की बीमारी है जो सब को लग रही है। देख लीजिए, ये कमज़ोरियाँ हैं हम में। कोढ़ का क्या कायदा है? उसमें बू आने लगती है, कोई नज़दीक नहीं आता, इससे किनारे हो जाओ, भई। कहते हैं, ये हैं मानस रोग जिनमें दुनिया फँस रही है।

(35) अहंकार अति दुखद डमरुआ। दम्भ कपट मद मान नेहरुआ।।

गरूर (अहंकार) एक डमरू रोग होता है, उस की तरह है। अहंकार में मत्ता (डूबा) फिरता है। पाखंड, कपट वगैरा ये भी रोग हैं। नेहरुआ रोग होता है, यह लम्बा सा कीड़ा बन जाता है। बस यह हाल है दुनिया का। ये मानस रोग हैं जिनमें सब दुनिया जा रही है।

(36) तृस्ना उदरबृद्धि अति भारी। त्रिबिधि ईषना तरुन तिजारी।।

लालच जलन्दर रोग है। जलंदर रोग पता है, पेट में पानी पड़ जाता है। जिस में पड़ जाये, पड़ता ही रहता है और बढ़ता है। इसी किस्म के ईर्षा, द्वेष, कई किस्म के रोग बन जाते हैं।

(37) जुग बिधि ज्वर मत्सर अबिबेका। कहं लगि कहौं कुरोग अनेका।।

कहते हैं, पराई भलाई को न देख सकना और अज्ञान, ये दो किस्म

के बड़े बुखार हैं और इन से कई रोग और पैदा हो जाते हैं। यह मानस रोगों का ज़िक्र कर रहे हैं कि ये रोग हैं जो मनुष्य को लग रहे हैं।

(38) दोहा – एक ब्याधि बस नर मरहिं ए असाधि बहु ब्याधि।

पीड़हि संतत जीव कहुँ, सो किमि लहै समाधि।।

कहते हैं, आदमी को एक मर्ज़ (रोग) लग जाये तो मौत के घाट उतरता है। जिस को इतने रोग लग जायें, उसका क्या हश्र होगा? समझे। कहते हैं, फिर वे सुख कैसे पा सकते हैं? आगे इसका थोड़ा सा जवाब देते हैं दोहे में।

(39) नेम धर्म आचार तप ग्यान जग्य जप दान।

भेषज पुनि कोटिन्ह नहिं, रोग जाहिं हरि जान।।

कहते हैं, इन सबका इलाज हरि का जानना है, आत्मा का मन–इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ कर प्रभु से मिलना है। अगर वह (प्रभु) मिल जाये, जैसे आग के पास बैठने से सब सर्दियां दूर हो जाती हैं, सब ठंडक दूर हो जाती है, बर्फ के पास बैठने से गर्मी दूर हो जाती है, वैसे ही जब आत्मा मन–इन्द्रियों से आज़ाद होकर ऊपर आ गई तो आत्मा महाचेतन प्रभु से जुड़ कर इन सारे रोगों से आज़ाद हो जाती है। गुरबाणी में आता है –

रोग रहित मेरा सतगुरु जोगी।।

कहते हैं, मेरा सत्गुरु ही सब रोगों से रहित है, बाकी सब रोगों से भरे पड़े हैं। तो कहते हैं, दुनिया में जितने नियम हैं, धर्म हैं, आचार हैं, तप हैं, ज्ञान, यज्ञ, जप, दान वगैरा हैं जिनका ताल्लुक अपराविद्या से है, उनके करने से भी ये रोग नहीं जाते। इन रोगों से हटने का इलाज, छूटने का इलाज आत्मा का प्रभु से जुड़ना है, पराविद्या, आत्म–तत्त्व

का बोध। आगे, बहुत सारा खोल कर समझायेंगे। तो इतना यह सात सवालों का जवाब काकभुशुंडि जी ने गरुड़ को दिया। इन में सब हमारी बीमारियों का ज़िक्र आ गया, उन का इलाज भी बताया। तो सन्तों के पास यही इलाज है कि आप को इन्द्रियों के घाट से ऊपर आने का रास्ता देते हैं। ये दुख कहाँ से आते हैं? कामनायें कहाँ से पैदा होती हैं? इन्द्रियों के घाट से। वे कहते हैं आँखों को बन्द कर लो, कानों को बन्द कर लो, मुँह बन्द कर लो, बाहर की कामनायें हिलोर देने वाली नहीं पैदा होंगी। देख–देख कर ख्वाहिशात (इच्छाएँ) पैदा होती हैं या सुन–सुन कर या भोग–भोग कर। कहते हैं, इन सब को इधर से हटाकर नाम के रस में जोड़ दो, ये सारे रस फीके पड़ जाएंगे, आना–जाना खत्म हो जाएगा। इन सब का इलाज हरि का भजन है, पराविद्या है, आत्म–तत्त्व का बोध है। जो सुरत का शब्द के साथ, नाम के साथ लगना है, यह इन सब दुखों का वाहिद (एक मात्र) इलाज है। यही स्वामी जी महाराज ने फरमाया—

जो जो चोर भजन के प्राणी, नित नित दुख सहें।
काम क्रोध सतावें उनको, लोभ नदी में डूब मरें।।

'सौ सियाने एक ही मत।' रामायण यही कह रही है, काकभुशुंडि जी यही कह रहे हैं, यही स्वामी जी महाराज कह रहे हैं। सब महापुरुषों के कलाम लो, यही बात कहते हैं। अरे भाई, कामनाओं से विहीन बनो, एक इलाज। कब होगे? जब इन्द्रियों का घाट छूटेगा। बाहर के रस हमें क्यों असर कर रहे हैं? हम इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं।

गुरि दिखलाई मोरी, जितु मिरग पड़त हैं चोरी।।

गुरु वह मोरियाँ दिखलाता है जिनसे हम लूटे जाते हैं।

मूंदि लिए दरवाजे, बाजीअले अनहद बाजे।।

बाहर के दरवाजों को बन्द कर लिया, अन्दर वह अनहद ध्वनि, श्रुति जारी हो गई, उस ज्योति का विकास हो गया, उस महारस को पा कर दुनिया के रस फीके पड़ गये, आना-जाना खत्म हो गया। यह है इलाज सब बीमारियों का, जिन में दुनिया जा रही है। तो सात सवालों का बड़ी खूबसूरती से जवाब दिया है। इन को समझो। ग्रन्थों-पोथियों के पढ़ने से नहीं, समझो उन्होंने क्या कहा है? हमारी ही इन बीमारियों का इलाज है? वह हरि भजन के बगैर कुछ नहीं। हरि भजन कब मिलता है? जो हरि को भजते हैं, उनकी सोहबत से। उनका नाम सन्तजन है। उनका स्वभाव क्या है? मन, वचन, कर्म से परोपकार करना, कोई बुरा करे तो भी उसके साथ उपकार करना। यह उन का खासा (गुण) है। तो यह रामायण का कुछ हिस्सा था जो आप के सामने रखा गया। हर एक महापुरुष ने यही बात कही है।

वेद कतेब कहहु मत झूठे, झूठा सो जो न बिचारै।।

ग्रन्थों-पोथियों में उन महापुरुषों के बयान हैं जिनको पढ़ कर समझना है। जो उपदेश मिले, उसको धारण करना है। उससे कल्याण होगा। जो गिज़ा (खुराक) खा कर हज़म हो जायेगी, वही ताकत देगी। जो हज़म नहीं होगी, वह बीमारियाँ पैदा करेगी। तो आमिल होना, अमल हो साथ, तब तो ठीक है, नहीं तो खारिश (खुजली) की बीमारी है। जितनी खाज ज़्यादा करोगे, उतनी और बढ़ेगी।

दुनिया में रह कर इससे किनारे कैसे रह सकता है? सवाल यह है। एक फकीर ने कहा है-

दर मिआनि काअरे दरिया तख्ता बन्दम करदई
बाद में गोई कि दामन तर मकुन हुशियारबाश।

कि दरिया में एक तख्ते पर हमें बिठा दिया गया है, फिर कहते हैं देखना, कपड़े भीग न जायें। हम दुनिया में हैं, इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, अरे भाई, कैसे बचें?

काजल की कोठरी में कोई कैसो ही सियानो बने
दाग लागत पर लागत है।

जब तक इन्द्रियों के घाट पर बैठे हो, बाहर की कामनायें आयेंगी। किसी महापुरुष के पास बैठो, कामनाओं को बन्द करना सीखो। ये सब संस्कार बाहर से आते हैं। आँख को बन्द कर लो, बाहरी संस्कार न लो। कान को बन्द करना सीखो, ज़बान को बन्द करना सीखो, अन्तर्मुख हो जाओ, तुम को हकीकत का राज़ (भेद) मिलेगा, वह चीज़ मिल जायेगी जिसको पाकर दुनिया की कामनायें खत्म हो जायेंगी।

तो कामना-विहीन होने से ही मुक्ति है। तभी दुनिया में सुखी रह सकते हो, नहीं तो दुखों का रूप बन जाओगे। इसलिए महापुरुषों ने यही कहा, **Be desireless** (कामना विहीन हो जाओ)। कामनायें ही नहीं तो दुख कहाँ? दुनिया में रहो, हरि से जुड़े रहो।

'हरगिज मगो।' कहते हैं, हम तुम को यह नहीं कहते कि 'अज दुनिया जुदा बाश,' दुनिया से जुदा रहो। मगर, 'कि हर कारे बाशी बा खुदा बाश,' 'किसी काम में रहो, प्रभु से जुड़े रहो'। इसकी (दुनिया का) कामनाओं से रहित रहो। फिर दुनिया में रहते हुए तुम्हारी मुक्ति है। यह साधन कहाँ से मिलता है?

नानक पूरा सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति।।
हसंदियां खेलंदियां पैनंदियां खावंदियां विचे हौवे मुकति।।

घर-बार छोड़ने की ज़रूरत नहीं। ख़्वाहिशात को कम करो।

जितनी कम कर लो उतने सुखी, जितनी ख़्वाहिशात बढ़ाओगे, उतने ही दुखी। बड़े थोड़े लफ्ज़ों में—

साई दा की पावणा, इद्धरों पट्टणां ते उद्धर लावणा।

यह है इलाज इसका। तो आज का सत्संग, रामायण से दो हिस्से आपके सामने रखे गये। एक तो काकभुशुंडि जी ने अपनी कहानी बयान की कि मैं इस योनि में कैसे आया? किसी अनुभवी पुरुष की निरादरी करने से। गुरु की सिफारिश पर और योनियों से रिहाई हुई, काकभुशुंडि काग बने और सात सवाल, जो दुनिया में हर एक के दिल में उठ रहे हैं उनका बड़ी खूबसूरती से जबाब दिया है। इनको दिल में धारण करो। जितना धारण करोगे उतना ही हकीकत के नज़दीक हो जाओगे, जन्म सफल हो जायेगा।

+++